जनसंख्या संघटन
[POPULATION COMPOSITION]

- **आयु संरचना** (Age Structure)
- **आयु संरचना के प्रभाव** (Effects of Age Structure)
- **आयु-लिंग पिरामिड** (Age-Sex Pyramid)
- **लिंग अनुपात** (Sex Ratio)
- **ग्रामीण-नगरीय जनसंख्या** (Rural-Urban Population)
- **साक्षरता** (Literacy)
- **जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना** (Occupational Structure of Population)
- **स्मरणीय तथ्य** (Points to Remember)
- **एन. सी. ई. आर. टी. कॉर्नर** (NCERT Corner)
- **प्रश्न** (Questions)
- **मूल्य आधारित प्रश्न** (Value Based Questions)
- **उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल प्रश्न** (HOTS Questions)

जनसंख्या संघटन जनसंख्या के उस पक्ष को प्रदर्शित करता है जिसकी माप की जा सके। जनसंख्या संघटन के प्रमुख घटक आयु, लिंग, साक्षरता, ग्राम्य-नगर अनुपात तथा व्यावसायिक संरचना आदि हैं जिनकी माप दस वर्षीय जनगणनाओं में की जाती है।

आयु संरचना
(AGE STRUCTURE)

आयु संरचना किसी भी जनसंख्या की एक आधारभूत विशेषता होती है क्योंकि आयु संरचना विभिन्न जनांकिकी तथ्यों के साथ ही अनेक सामाजिक-आर्थिक क्रियाओं को भी प्रभावित करती है। इसके अन्तर्गत किसी देश या प्रदेश की जनसंख्या में आयु-वर्ग के अनुपात का अध्ययन किया जाता है अर्थात् कितने लोग बच्चे हैं, कितने प्रौढ़ हैं तथा कितने वृद्ध हैं।

विश्व में जनसंख्या की आयु संरचना (Age Structure of Population in the World)

सामाजिक, आर्थिक तथा जनांकिकीय दृष्टि से 15 वर्ष तथा 60 वर्ष की आयु महत्वपूर्ण विभाजक मानी जाती है। इसके अनुसार जनसंख्या को तीन प्रमुख आयु समूहों में बाँटा जाता है—

(1) बाल आयु वर्ग—0-14 वर्ष,

(2) वयस्क आयु वर्ग—15-60 वर्ष,

(3) वृद्ध आयु वर्ग—60 या 65 वर्ष से अधिक।

(1) **बाल आयु वर्ग** (Young Age Group)—इस आयु वर्ग में 0-14 वर्ष या 15 वर्ष से कम आयु के बच्चे सम्मिलित होते हैं। यह आयु वर्ग अनुत्पादक होता है साथ ही इनके पालन-पोषण एवं शिक्षा आदि पर अधिक व्यय होता है जिसका आर्थिक भार वयस्क आयु वर्ग पर पड़ता है। इसे आश्रित जनसंख्या कहते हैं। विश्व के विभिन्न भागों में बाल आयु वर्ग का अनुपात एकसमान नहीं है। विश्व के विकासशील देशों; जैसे—चीन, भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, अफ्रीकी देश तथा लैटिन अमेरिकी देशों में बाल आयु वर्ग का अनुपात अधिक है जिसका

कारण जन्म-दर की अधिकता है। इसके विपरीत विश्व के विकसित देशों; जैसे—संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, जापान, ग्रेट-ब्रिटेन, कनाडा, रूस आदि में बाल आयु वर्ग के लोगों का अनुपात कम होता है। ऐसा वहाँ न्यून जन्म-दर के कारण है। ध्यातव्य है कि बाल आयु वर्ग अनुत्पादक आयु वर्ग होता है अतएव जहाँ इसकी संख्या अधिक होती है उन देशों को अपना आर्थिक विकास शीघ्र करने में कठिनाई होती है।

(2) **वयस्क आयु वर्ग** (Adult Age Group)—इस आयु वर्ग में 15-60 वर्ष तक के लोगों को सम्मिलित किया जाता है। इस जनसंख्या को कार्यशील जनसंख्या कहते हैं। **ट्रिवार्था** के शब्दों में, "वयस्क आयु वर्ग जैविक दृष्टिकोण से सर्वाधिक प्रजननशील, आर्थिक रूप से सर्वाधिक क्रियाशील एवं उत्पादक तथा जनांकिकीय रूप से सर्वाधिक गतिशील होता है।" बाल एवं वृद्ध आयु वर्ग के लोग इसी आयु वर्ग के लोगों पर आश्रित होते हैं क्योंकि वयस्क आयु वर्ग के लोग ही धनोपार्जन करते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व की कुल जनसंख्या में वयस्क आयु वर्ग का अनुपात विकसित देशों में 65.6% तथा विकासशील देशों में 56.2% है। अफ्रीका महाद्वीप में वयस्क जनसंख्या का अनुपात सबसे कम (51.2%) तथा यूरोप महाद्वीप में सबसे अधिक (64.7%) है। इसी तरह एशिया में 56.6%, उत्तरी अमेरिका में (64.6%), दक्षिण अमेरिका में 56.3% है।

(3) **वृद्ध आयु वर्ग** (Old Age Group)—इस आयु वर्ग में सामान्यत: 60 या 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोग सम्मिलित किये जाते हैं। इस आयु वर्ग के लोग वृद्ध, बुजुर्ग या वरिष्ठ नागरिक कहे जाते हैं। इस आयु वर्ग के लोगों की शारीरिक क्षीणता तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण क्रियाशीलता कम हो जाती है। विकसित देशों में जहाँ जन्म-दर एवं मृत्यु-दर दोनों न्यूनतम स्तर पर पहुँच गये हैं, वहाँ जीवन प्रत्याशा उच्चतम होती है। उन देशों में वृद्ध आयु वर्ग के लोगों की संख्या अधिक होती है। सम्पूर्ण विश्व में 5.7% जनसंख्या 65 वर्ष से अधिक आयु की है जिसमें से विकसित देशों में यह 11.4% तथा विकासशील देशों में 3.8% है। इस आयु वर्ग के लोग अधिकांशतया वयस्क आयु वर्ग पर निर्भर होते हैं।

आयु संरचना के प्रभाव
(EFFECTS OF AGE STRUCTURE)

असन्तुलित आयु संरचना के कारण किसी देश की आर्थिक व्यवस्था पर अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(1) जिन देशों में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है, उनमें बच्चों की संख्या अधिक होती है। यदि इनमें आर्थिक विकास भली-भाँति होता रहे तो यह ऊँचा प्रतिशत एक प्रकार से लाभदायक भी होता है क्योंकि वस्तुओं का उत्पादन अधिक होने के साथ-साथ श्रमिकों की संख्या भी बढ़ती है, किन्तु यदि आर्थिक दृष्टि से ये देश स्थिर होते हैं तो यह भारस्वरूप हो जाता है जैसा कि भारत, मैक्सिको, ब्राजील एवं फिलीपाइन्स में देखने में आता है। इन देशों में 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों का प्रतिशत 40 है, अधिक विकसित देशों में वृद्धों का प्रतिशत अधिक होने से भी वह भारस्वरूप हो जाता है।

(2) विकासशील देशों में बच्चों का प्रतिशत अधिक होने से राष्ट्रीय आय और उत्पादक वर्ग पर निरन्तर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यह प्रतिशत कुल जनसंख्या की श्रम शक्ति को कम करता है जिसके कारण प्रति व्यक्ति उत्पादन और प्रति व्यक्ति आय भी कम होती है। एक अनुमान के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका में बच्चों का लगभग 70 प्रतिशत 60 वर्ष तक जीवित रहकर 40 वर्षों तक वस्तुओं, सेवाओं के निर्माण में योगदान देता है, जबकि भारत में 15 प्रतिशत व्यक्ति ही 60 वर्ष तक जीवित रहते हैं। दूसरे शब्दों में, विकसित राष्ट्र की जनसंख्या अपने ऊपर हुए राष्ट्रीय विनियोग के प्रतिफल में राष्ट्र को अपनी सेवाएँ देती है, जबकि विकासशील देशों में 15 से 64 वर्ष के आयु वर्ग का प्रतिशत कम होने से आर्थिक विकास में कमी रहती है।

(3) विकासशील देशों में प्रत्याशित आयु विकसित देशों की तुलना में भी कम होती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में यह 79 वर्ष, कनाडा में 82 वर्ष, ग्रेट-ब्रिटेन में 81 वर्ष, फ्रांस में 82 वर्ष, जापान में 84 वर्ष जबकि विकासशील देशों में आयु कम होती है। भारत में 66 वर्ष, पाकिस्तान में 66 वर्ष, बांग्लादेश में 71 वर्ष और इण्डोनेशिया में 71 वर्ष है।

(4) जिन देशों को आज विकसित कहा जाता है, उनमें भी पूर्व औद्योगिक अवस्था में युवा जनसंख्या का आधिक्य था किन्तु औद्योगिक विकास के उत्कृष्ट काल में अब इसमें परिवर्तन आ गया है और वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत पूर्व की अपेक्षा बढ़ गया है। ऐसी स्थिति को 'Aging of Population' कहा जाता है। यह स्थिति संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ग्रेट-ब्रिटेन, फ्रांस, नीदरलैण्ड्स, स्वीडन, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और ऑस्ट्रिया में पायी जाती है। अत: अब वहाँ वास्तविक जनसंख्या वृद्धि-दर तेजी से घटती जा रही है।

विकासशील देशों में अल्प आयु में बच्चों की मृत्यु अधिक होती है।

भारत में 108, पाकिस्तान में 136, मिस्र में 73 प्रति हजार है, जबकि विकसित देशों में यह बहुत कम है—संयुक्त राज्य अमेरिका में 8, फ्रांस में 5, स्वीडन में 4 प्रति हजार है।

आयु-लिंग पिरामिड
(AGE-SEX PYRAMID)

जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना के अनुपात को व्यक्त करने हेतु एक विशेष प्रकार के रेखाचित्र का निर्माण किया जाता है जो पिरामिड जैसा दिखाई देता है। इसी कारण इसे आयु-लिंग पिरामिड कहा जाता है। आयु-लिंग पिरामिड में आयु संरचना को प्रदर्शित करने के लिए ऊर्ध्वाधर रेखा पर आयु समूह तथा क्षैतिज रेखा पर उस आयु समूह के पुरुष व महिलाओं की संख्या को प्रतिशत में प्रदर्शित किया जाता है। ऊर्ध्वाधर अक्ष पर 5 वर्ष के सतत अन्तराल से आयु वर्ग प्रदर्शित किया जाता है। आयु वर्ग के दायीं ओर महिलाओं को तथा बायीं ओर पुरुषों की जनसंख्या के प्रतिशत को प्रदर्शित किया जाता है। विश्व के अलग-अलग देशों के आयु-लिंग पिरामिडों पर दृष्टिपात करने पर तीन अलग-अलग प्रतिरूप बनते हैं—

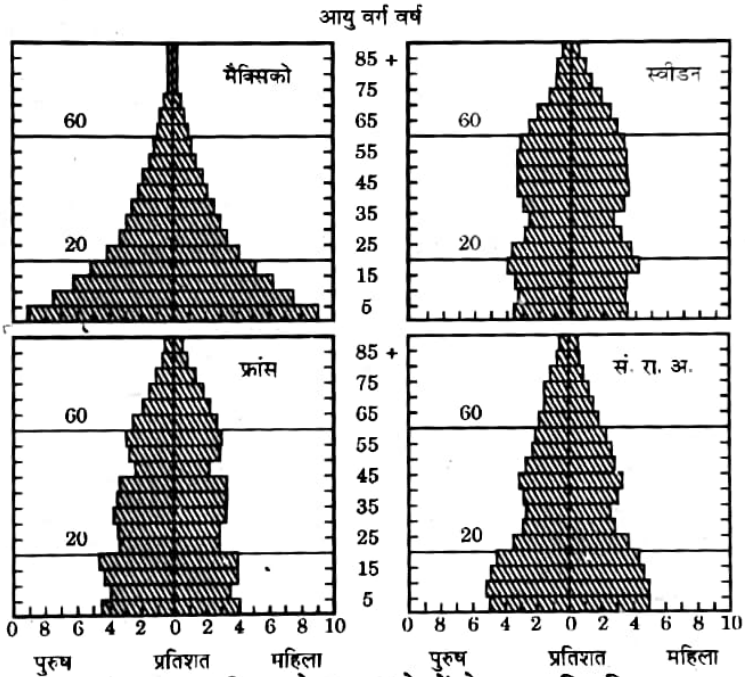

चित्र 3.1 : विश्व के प्रमुख देशों के आयु पिरामिड

(1) **वृद्धिमान जनसंख्या** (Increasing Population)—यदि किसी पिरामिड का आधार चौड़ा है तथा ऊपर की ओर शिखर लगातार पतला होता जाता है तो इसका तात्पर्य है कि जन्म एवं मृत्यु-दर दोनों उच्च हैं। भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान तथा अफ्रीका एवं कुछ लैटिन अमेरिकी देशों में आयु संरचना ऐसी ही है। नाइजीरिया इस वर्ग का सर्वोत्तम उदाहरण है।

(2) **स्थिर जनसंख्या** (Constant Population)—जब पिरामिड का आकार नीचे से मध्य भाग तक लगभग लम्बवत् हो और शीर्ष भाग भी अपेक्षाकृत कम ढाल वाला हो तो यह स्थिर जनसंख्या का द्योतक होता है। ऐसे देशों में जन्म-दर और मृत्यु-दर दोनों न्यूनतम स्तर पर होती हैं, जैसे फ्रांस का आयु लिंग पिरामिड। अधिकांश विकसित देशों में यही प्रतिरूप मिलता है।

(3) **ह्रासमान जनसंख्या** (Decreasing Population)—जब पिरामिड का आकार नीचे पतला और मध्य में अपेक्षाकृत मोटा तथा शीर्ष मध्यम ढाल वाला हो तो यह घटती जनसंख्या को व्यक्त करता है। ऐसे देशों में जन्म-दर ऋणात्मक तथा मृत्यु-दर बहुत कम होती है। यूरोपीय देश स्वीडन, इटली आदि इसी श्रेणी में आने वाले देश हैं। स्वीडन का आयु-लिंग पिरामिड प्रदर्शित है।

लिंग अनुपात
(SEX RATIO)

लिंग अनुपात से तात्पर्य किसी जनसंख्या में सभी आयु वर्गों की कुल स्त्रियों व पुरुषों का अनुपात है। किसी जनसंख्या की लिंग संरचना को सामान्यतः स्त्री-पुरुष अनुपात के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। इसकी परिकल्पना भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न प्रकार से की जाती है। विश्व में प्रति एक हजार पुरुषों पर औसत लिंग अनुपात 984 है। विश्व में उच्चतम लिंग अनुपात लाटविया (1187) तथा निम्नतम लिंग अनुपात संयुक्त अरब अमीरात (468) में दर्ज किया गया है। भारत में 1000 पुरुषों के पीछे पायी जाने वाली महिलाओं की संख्या को ही लिंगानुपात (पुरुष-स्त्री अनुपात) कहा जाता है। यहाँ 2011 की जनगणना के अनुसार प्रति 1000 पुरुषों के पीछे 943 स्त्रियों का अनुपात है। यदि लिंग अनुपात 1000 से अधिक है तो ऊँचा अनुपात एवं यदि 1000 से नीचा है तो निम्न अनुपात माना जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में लिंगानुपात प्रति 100 स्त्रियों पर पुरुषों की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है, जबकि न्यूजीलैण्ड में प्रति 100 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है।

विश्व-स्तर पर स्त्री-पुरुष अनुपात में काफी भिन्नता मिलती है। विश्व के विभिन्न महाद्वीपों का लिंगानुपात नीचे प्रदर्शित है—

महाद्वीप	लिंगानुपात (स्त्रियाँ प्रति 1000 पुरुष पर)	महाद्वीप	लिंगानुपात (स्त्रियाँ प्रति 1000 पुरुष पर)
यूरोप	1051	दक्षिण अमेरिका	995
उत्तरी अमेरिका	1050	ऑस्ट्रेलिया	983
अफ्रीका	1017	एशिया	960
		विश्व	984

लिंगानुपात को निम्नांकित कारक प्रभावित करते हैं—

(1) **जन्म-दर**—समस्त जीवधारियों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुष जन्म की प्रधानता होती है। यद्यपि अधिकांश समाजों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की प्रधानता जन्म के समय अधिक रहती है किन्तु प्रत्येक देश के लिए यह सत्य नहीं है। जन्म पूर्व क्षति के निम्न या उच्च होने के अनुसार ही विभिन्न देशों में लिंगानुपात जन्म के समय निम्न या उच्च रहता है। इस प्रकार बहुसंख्यक मुस्लिम राष्ट्रों और एशियाई देशों में उच्च पुरुष जन्म-दर, यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका में मध्यम और दक्षिणी अमेरिका में निम्न-दर है।

(2) **मृत्यु-दर**—जैविकीय दृष्टि से पुरुष और स्त्रियों में विभिन्न बीमारियों की प्रतिरोधी शक्ति भिन्न-भिन्न होती है। विकासशील देशों में शिशु मृत्यु-दर बालिकाओं की अपेक्षा बालकों में अधिक होती है। अत: बालकों के जन्म के समय की अधिकता कुछ ही समय में समाप्त हो जाती है। 30 वर्ष की आयु के बाद स्त्रियों की संख्या बढ़ जाती है। प्राय: देखा जाता है कि स्त्रियों को समाज में कम महत्व दिया जाता है अत: उनके पोषण आहार के प्रति भी लापरवाही होती है। इसीलिए प्रजनन काल में मृत्यु की अधिकता रहती है। इससे लिंगानुपात प्रभावित होता है।

(3) **स्थानान्तरण**—स्थानान्तरण व्यापक रूप से लिंगानुपात को असन्तुलित करता है क्योंकि सामाजिक रीति-रिवाज, अर्थव्यवस्था आदि कारण स्थानान्तरण में लिंगानुपात को निर्धारित करते हैं। पहले स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में स्थानान्तरणशीलता अधिक थी, किन्तु अब यातायात व संचार साधनों के विकास के कारण विकसित देशों में स्त्रियाँ भी स्थानान्तरित होने लगी हैं। विश्व के औपनिवेशिक देशों में पुरुष-प्रधान प्रारम्भिक स्थानान्तरण के कारण स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की अधिकता है।

अधिकांश विकासशील देशों में लोग आजीविका की तलाश में ग्रामीण क्षेत्र से नगरीय क्षेत्रों में प्रवास करते हैं जिससे ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में नगरीय क्षेत्र में पुरुषों की संख्या बढ़ जाती है और लिंगानुपात असन्तुलित हो जाता है। आर्थिक रूप से सम्पन्न राष्ट्रों में स्थिति इसके विपरीत पायी जाती है।

ग्रामीण-नगरीय जनसंख्या
(RURAL-URBAN POPULATION)

जनसंख्या को दो वर्गों में रखा जाता है—ग्रामीण एवं नगरीय। ग्रामों में निवास करने वाली जनसंख्या ग्रामीण तथा नगरों में निवास करने वाली नगरीय जनसंख्या कहलाती है। ग्रामीण जनसंख्या कृषि, मत्स्य पालन, आखेट, एकत्रीकरण तथा खनन जैसे प्राथमिक कार्यों में संलग्न रहती है। इसके विपरीत नगरीय अधिवासों के लोग द्वितीयक व तृतीयक कार्यों में संलग्न रहते हैं। इनके प्रमुख कार्य व्यापार, उद्योग, परिवहन तथा सेवाएँ आदि हैं।

ग्रामीण और नगरीय जनसंख्या में अन्तर पाया जाता है। यद्यपि औद्योगिक देशों में नगरीकरण की प्रवृत्ति तीव्र गति से बढ़ी है फिर भी विश्व के अनेक देशों में ग्रामीण जनसंख्या का घनत्व अधिक है।

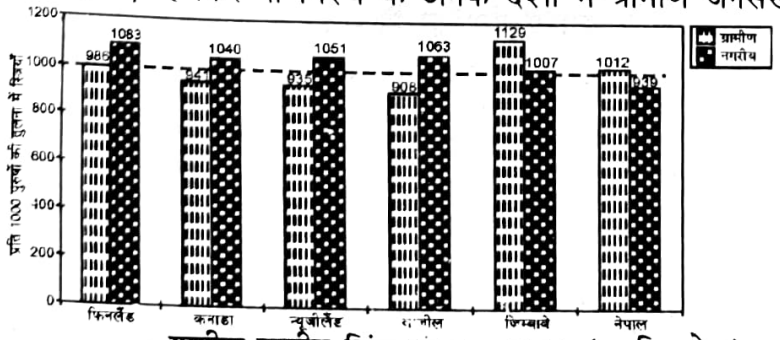

: ग्रामीण-नगरीय लिंग संघटन, 2003 (चयनित देश)

ग्रामीण-नगरीय जनसंख्या के वितरण की दृष्टि से निम्न तथ्य उल्लेखनीय हैं—

(1) विश्व में ग्रामीण-नगरीय जनसंख्या के वितरण में अधिक अन्तर पाया जाता है। सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या का 48 प्रतिशत नगरों में निवास करता है। गाँवों का प्रतिशत 52 है। विकसित देशों में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 76 और विकासशील देशों में यह मात्र 41 प्रतिशत है। विकासशील देश कृषि-प्रधान होते हैं, अत:

अधिकांश जनसंख्या गाँवों में ही निवास करती है और विकासशील देशों में उद्योगों के विकास के कारण नगरीय जनसंख्या अधिक पायी जाती है।

विश्व के चुने हुए देशों में आयु-लिंग संघटन, 2003

देश	ग्रामीण क्षेत्र	नगरीय क्षेत्र	देश	ग्रामीण क्षेत्र	नगरीय क्षेत्र
कनाडा	941	1040	ब्राजील	908	1063
फिनलैण्ड	986	1083	जिम्बाब्वे	1129	1007
न्यूजीलैण्ड	935	1051	नेपाल	1012	939

(2) महाद्वीपों की दृष्टि से भी ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या में अन्तर पाया जाता है। विभिन्न महाद्वीपों में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत निम्न प्रकार है—

महाद्वीप	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत (2015)	महाद्वीप	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत (2015)
अफ्रीका	40	यूरोप	73
उत्तरी अमेरिका	81	ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैण्ड	90
एशिया	47		

(3) महाद्वीपों के उपप्रदेशों में यह अन्तर और भी अधिक स्पष्ट रूप से दिखायी देता है। पूर्वी अफ्रीका के देशों में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 25 है, जबकि चीन में यह प्रतिशत 54 है। दक्षिण-पूर्वी एशिया में 38 प्रतिशत है। मध्य दक्षिणी एशिया में 30 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है।

(4) विकासशील देशों में नगरीय जनसंख्या का स्तर कम है। कृषि-प्रधान देशों में ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात अधिक पाया जाता है। इसके विपरीत औद्योगिक देशों में नगरीय जनसंख्या अधिक पायी जाती है।

(5) नगरीय जनसंख्या ग्रामीण जनसंख्या की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ी है। सन् 1800 में विश्व की केवल 2.5 प्रतिशत जनसंख्या ही नगरों में निवास करती थी जो वर्तमान में लगभग 53 प्रतिशत है। इस नगरीय वृद्धि के लिए 60 प्रतिशत प्राकृतिक कारक उत्तरदायी रहे, जबकि 40 प्रतिशत वृद्धि प्रवास के कारण हुई। नगरीय जनसंख्या वृद्धि से अनेकानेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

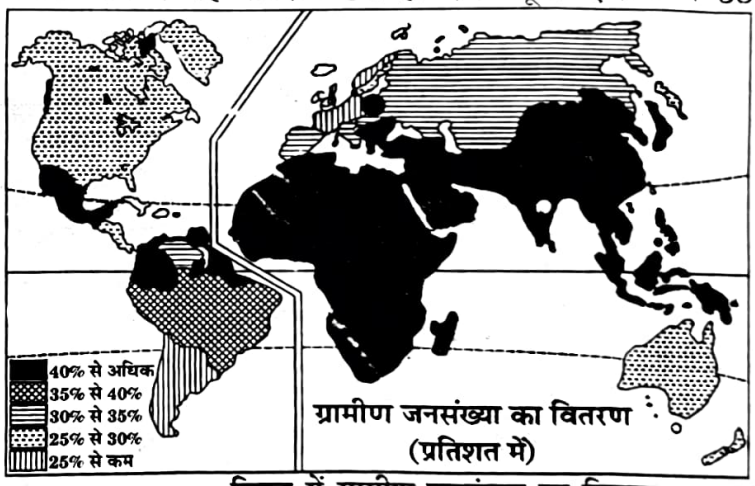

विश्व में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण

विश्व के विकसित देशों में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 76 है, जबकि कम विकसित देशों में यह प्रतिश. केवल 41 है।

विश्व में नगरीय जनसंख्या का वितरण, 2014

विकसित देश	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	विकासशील देश	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
कनाडा	82	भारत	32
जर्मनी	75	पाकिस्तान	38
फ्रांस	79	श्रीलंका	18
स्वीडन	86	केन्या	25
यू. के.	82	चीन	54
संयुक्त राज्य अमेरिका	81	इण्डोनेशिया	53

रूस	74	ब्राजील	85
जापान	93		

स्रोत : विश्व बैंक

साक्षरता
(LITERACY)

सरल शब्दों में, 15 वर्ष से अधिक का वह व्यक्ति जो लिखना-पढ़ना जानता हो, साक्षर कहलाता है। किसी देश या प्रदेश की कुल जनसंख्या में साक्षर व्यक्तियों के प्रतिशत को साक्षरता कहते हैं।

साक्षरता जनसंख्या का एक ऐसा सामाजिक पक्ष है जिसके आधार पर सामाजिक विकास का मापदण्ड निश्चित किया जा सकता है। यह किसी देश या प्रदेश की उन्नति का सूचक है। साक्षरता का विकास की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रवृत्तियों से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।

विश्व के प्रमुख देशों में साक्षरता की स्थिति (Condition of Literacy in prominent Countries of the World)

विश्व के विभिन्न देशों में साक्षरता की मात्रा में भिन्नता पायी जाती है। एक वृहद् देश के भीतर भी विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों या समुदायों की शिक्षा तथा साक्षरता में अन्तर पाया जाता है। ये अन्तर निम्नलिखित चार प्रकार के होते है—

(1) ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्र में,

(2) पुरुष व स्त्री वर्ग में,

(3) विभिन्न सामाजिक व धार्मिक समुदायों में,

(4) विभिन्न व्यापारिक समूहों में।

अल्प-विकसित देशों के ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों की साक्षरता की मात्रा में महत्वपूर्ण अन्तर पाया जाता है। इसके निम्नलिखित कारण है—

(1) ग्रामों की तुलना में नगरीय क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्ति की सुविधाएँ अधिक हैं।

(2) नगरों का सामाजिक-आर्थिक ढाँचा ऐसा होता है जिसमें साक्षरता की आवश्यकता अधिक होती है।

(3) नगरीय जनसंख्या में अपने बच्चों को शिक्षा देने की सामाजिक चेतना तथा आर्थिक क्षमता अधिक होती है।

पुरुषों की तुलना में स्त्रियों में साक्षरता की दर कम है। विकासशील देशों में स्त्रियों की साक्षरता दर न्यून होती है क्योंकि—

(1) यहाँ गरीबी के कारण लड़कियाँ विद्यालयों में जाने की व्यवस्था नहीं कर पाती हैं।

(2) यहाँ स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा कम महत्व दिया जाता है। अत: स्त्री शिक्षा को कम महत्व दिया जाता है।

(3) इस्लाम धर्म मानने वाले देशों में स्त्री शिक्षा की उपेक्षा की जाती है।

व्यवसाय के आधार पर शिकार, पशुपालन तथा कृषि कार्य में लगे लोगों में साक्षरता कम होती है क्योंकि इन व्यवसायों में बिना शिक्षा के ही काम चल जाता है।

साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Literacy)

साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित है—

(1) **अर्थव्यवस्था का प्रकार**—निर्वाहमूलक कृषि तथा पशुपालन की अर्थव्यवस्था में साक्षरता कम तथा कृषि कार्यो को छोड़कर अन्य कार्यों में लगे लोगों में साक्षरता अधिक पायी जाती है।

(2) **जीवन स्तर**—रहन-सहन के उच्च स्तर वाले परिवारों में साक्षरता अधिक पायी जाती है, जबकि निम्न स्तर वाले परिवारों में साक्षरता दर कम पायी जाती है क्योंकि वहाँ शैक्षणिक सुविधाओं का अभाव पाया जाता है।

(3) **प्राविधिक विकास स्तर**—जहाँ औद्योगिक एवं प्राविधिक विकास अधिक हुआ है, वहाँ साक्षरता दर उच्च पायी जाती है। इसके विपरीत जहाँ इनका विकास कम हुआ है, वहाँ साक्षरता कम पायी जाती है।

(4) **जातीय संरचना**—विभिन्न जातियों एवं वर्गों में विभक्त समाज में साक्षरता में भिन्नता पायी जाती है वर्तमान समय में विभिन्न जातियों में प्रतिद्वन्द्विता के कारण साक्षरता दर बढ़ रही है।

(5) **समाज में स्त्रियों की स्थिति**—जिन समाजों में स्त्रियों की दशा निम्न तथा प्रतिष्ठा कम होती है, उनमें स्त्री साक्षरता कम पायी जाती है, जबकि वे समाज जहाँ स्त्रियों को अधिक महत्व दिया जाता है, शिक्षा के प्रसार पर भी ध्यान दिया जाता है। अत: साक्षरता अधिक होती है। भारत में ईसाई स्त्रियों में साक्षरता दर उच्च होती है।

जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना
(OCCUPATIONAL STRUCTURE OF POPULATION)

जनसंख्या के व्यवसाय उसके आर्थिक क्रियाओं से सम्बन्धित होते हैं। कम आयु के बच्चे, विद्यार्थी, गृहणियाँ तथा बुजुर्ग लोग जो जीवन-यापन के लिये आर्थिक कार्य में संलग्न नहीं होते हैं, वह सक्रिय जनसंख्या में सम्मिलित नहीं किये जाते हैं। 15-59 वर्ष के पुरुष-स्त्री सक्रिय जनसंख्या की श्रेणी में सम्मिलित किये जाते है। आर्थिक कार्य के अन्तर्गत सक्रिय जनसंख्या का अनुपातिक वितरण व्यावसायिक संरचना कहलाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निम्न प्रकार व्यावसायिक वर्गों की पहचान की गयी है—

आखेट, मत्स्यपालन, वानिकी, कृषि, खनन तथा वाणिज्य, संचार सेवाएँ, परिवहन आदि।

उपर्युक्त सभी को निम्न प्रकार चार भागों में वर्गीकृत किया गया है—

(1) **प्राथमिक व्यवसाय**—कृषि, वानिकी, आखेट तथा मत्स्यपालन को प्राथमिक व्यवसाय में सम्मिलित किया जाता है।

(2) **द्वितीयक व्यवसाय**—विनिर्माण उद्योग, खनन तथा शक्ति उत्पादन द्वितीयक व्यवसाय में सम्मिलित किये जाते हैं।

(3) **तृतीयक व्यवसाय**—संचार सेवाएँ, परिवहन, वाणिज्य तथा व्यापार तृतीयक व्यवसाय में सम्मिलित किये जाते हैं।

(4) **चतुर्थक व्यवसाय**—चिंतन, शोध, विचार आदि चतुर्थक व्यवसाय में सम्मिलित किये जाते हैं।

विभिन्न देशों के व्यवसाय में संलग्न जनसंख्या के अनुपात में भिन्नताएँ पायी जाती हैं। ये भिन्नताएँ देश के आर्थिक विकास के स्तर पर निर्भर करती हैं। अल्प-विकसित देशों में प्राथमिक व्यवसाय में संलग्न जनसंख्या का अनुपात अधिक होता है।